साहित्य यात्रा के साथ-साथ समाजदर्शन

पुस्तक को क्यों पढ़ें...

बेहतरीन विनिबंध के शौकीन इसे जरूर पढ़ें। विद्यार्थियों, शोधार्थियों, युवा जन और आम पाठक इस छोटी-सी पुस्तक में श्री लक्ष्मीनारायण लाल के जीवन वृत्त, उससे जुड़े छुए-अनछुए पहलू को जान सकते हैं। उनके सम्पूर्ण रचना-संसार से एक झलक में परिचित हो सकते हैं।

बेहतर होता अगर...

यदि इसमें केन्द्रित व्यक्तित्व और कृतित्व के चित्र भी होते। पूरी की पूरी रचनाओं का संक्षिप्त वर्णन ही होता और उनके आत्मकथ्य और दृष्टि कोण पर और सामग्री होती।

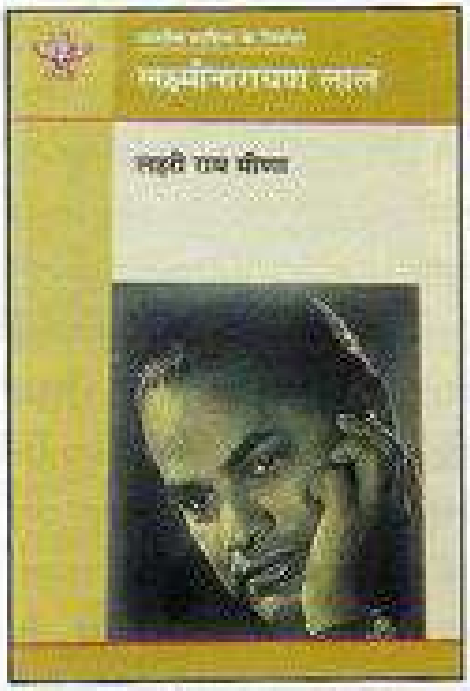

पुस्तक : लक्ष्मीनारायण लाल
लेखक : लहरी राम मीणा
प्रकाशक : साहित्य अकादमी, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001
पृष्ठ : 112; **मूल्य :** 100 रुपये

साहित्य अकादमी 'भारतीय साहित्य के निर्माता' श्रृंखला में विनिबंध विधा से जाने-माने और भूले-बिसरे साहित्यकारों के बारे में युवा जन और आमजन को जागरूक करने हेतु पुस्तकें प्रकाशित कर रही है। यह निश्चित रूप से प्रशंसनीय है। ये पुस्तकें भविष्य की थाती बनती जा रही हैं। प्रस्तुत समीक्षित पुस्तक भी इसी विधा की कड़ी में एक और माणिक्य यथा स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण लाल हैं।

लेखक लहरी राम मीणा ने बेहद संवेदनशील रूप से लक्ष्मीनारायण लाल के व्यक्तित्व, उनकी अभिरुचि और साहित्य यात्रा के साथ-साथ उनके समाज दर्शन, नवीन उद्भावनाओं एवं समसामयिक लेखन को भी उद्घाटित करने का शानदार प्रयास किया है। लक्ष्मीनारायण लाल को सबसे अधिक यश एक नाटककार के रूप में मिला।

जानकर आश्चर्य होगा कि इनका जन्म बारिश में हुआ था और उनकी दादी लक्ष्मीनारायण लाल का नाम 'झकड़ी' अर्थात 'बारिश' रखा था। तत्पश्चात स्कूल में नाम लिखवाने के समय से ये अपने नाम लक्ष्मीनारायण लाल नाम से जाने गए।

लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने कार्यकाल में अनेकों विश्वविद्यालयों तथा सरकारी विभागों में कार्य किया।

उन्होंने सन् 1956 में नाटककार जगदीश चन्द्र माथुर और प्रकृति के कोमल कवि सुमित्रानन्दन पन्त के आग्रह पर आकाशवाणी लखनऊ में ड्रामा प्रोड्यूसर के रूप में कार्य किया। सन् 1958 में उन्होंने 'नाट्य केन्द्र' नामक नाट्य संस्था की स्थापना की। सन् 1964 में यूरोप में होने वाली अंतरराष्ट्रीय नाटक संगोष्ठी में भारत का प्रतिनिधित्व किया और इस दौरान हुए ब्रिटेन, फ्रॉस, इटली, ग्रीक आदि देशों की यात्राओं पर गए। वे दिल्ली विश्वविद्यालय की हिन्दी विभाग में नाट्य प्रवक्ता के रूप में रहे और कुछ समय राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में बतौर सम्पादक कार्यरत रहे।

यहाँ पर एक और बात प्रासंगिक है कि लाल का साहित्य-लेखन नाटक का नहीं था। उन्होंने सभी विधाओं में लेखन कार्य किया विशेष रूप से उपन्यास, कहानी, एकांकी, जीवनी, निबन्ध एवं नाट्यालोचना से जुड़े सभी विषयों पर निरंतर लिखते रहे। वे एक स्थान पर लिखते हैं, "नाटक लिखते-लिखते जब थक जाता हूँ, तब उपन्यास लिखकर विश्राम करता हूँ, और जब उपन्यास लिखकर थक जाता हूँ, तब नाट्य-लेखन से विश्राम करता हूँ।"

लेखक ने उनके कृतित्व को साहित्य की विधाओं में अलग-अलग अध्यायों में वर्णित किया है जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। बतौर नाटककार लक्ष्मी नारायण लाल ने 30 नाटक लिखे। सभी नाटकों सहित अन्य विधाओं और कृतियों का सारगर्भित वर्णन पुस्तक में दिया गया है, जो कि इस पुस्तक की विशेषता है।

लक्ष्मीनारायण लाल ने एकांकी विधा में लगभग 95 एकांकी लघु नाटकों की रचना की है।

लक्ष्मीनारायण लाल एक जाने-माने उपन्यासकार भी थे जिन्होंने नाट्य साहित्य के साथ-साथ अन्य विधाओं में प्रचुर मात्रा में लेखन-कार्य किया। उन्होंने अपने जीवन काल में कुल 15 प्रमुख उपन्यासों का सृजन किया। बहुआयामी व्यक्तित्व और बहुमुखी प्रतिभा, यह दोनों ही विशेषण लक्ष्मीनारायण लाल के पर्याय थे। उन्होंने कुल तीन जीवनियाँ लिखी हैं, यथा 'जयप्रकाश', (1974), 'अंधकार में प्रकाश' : जय प्रकाश (1977) 'कर्मयोगी घनश्याम दास' (1987)। इस विनिबम्ध में लक्ष्मीनारायण लाल के विचार जो साहित्य समाज और राजनीति पर थे, उनका भी सहज, सरल परन्तु सारगर्भित वर्णन दिया गया है। पाठकों को नाटक और रंगमंच की नई दृष्टि जो कुल पाँच पृष्ठों का अध्याय है उसमें उनकी कुछ बानगी पाठकों को पढ़ने को मिलेगी श्री लाल ने पाँच नाट्यालोचना की पुस्तकें लिखी जिनमें प्रमुख हैं, 'रंगमंच और नाटक की भूमिका' (1960) 'पारसी हिन्दी रंगमंच' (1973), 'आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच' (1973), 'रंगमंच : देखना और जानना' (1983), 'रंगभूमि : भारतीय नाट्य सौन्दर्य' (1988)। परिशिष्ट एक और तीन में लक्ष्मीनारायण लाल का रचना-संसार तथा रचनाओं का प्रथम मंचन और निर्देशन बेहद उद्देश्यपूर्ण अंदाज़ में प्रकाशित किए गए हैं। नाट्यशास्त्र और नाटक मंचन का आनंद इसमें ले सकते हैं। ❑

समीक्षक : सूर्य कांत शर्मा
ई-मेल : suryakant_sharma03@yahoo.com